(7) भाषा द्वारा प्रतीत का व्यापकता है।

भाषा के माध्यम से ही ~~एक व्यक्ति~~ व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता है। भाषा के माध्यम से ही हम प्राचीन और नवीन ज्ञान और विश्व पहचानने की सामर्थ्य प्राप्त करते हैं। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है।

characteristics of Language

भाषा की विशेषताएँ :-

भाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

(1) प्रत्येक भाषा की कुछ ध्वनियाँ और ध्वनि समूह होते हैं। ध्वनि की लघुतम इकाई को ध्वनिग्राम कहते हैं

(2) प्रत्येक भाषा की अपनी एक व्याकरण व्यवस्था होती है जिसे वाक्य विज्ञान कहते हैं। प्रत्येक भाषा के वाक्यों के शब्द एक विशेष क्रम या व्यवस्था में होते हैं। यह व्यवस्था प्रत्येक भाषा में कुछ न कुछ भिन्न होती है

(3) प्रत्येक भाषा के शब्दार्थ भिन्न-भिन्न होते हैं

(4) भाषा में इसकी बोली अथवा लिखित सम्बन्धी गुण पाया जाता है। भाषा वैज्ञानिकों ने इस विशेषता को अधिक महत्व दिया है।

(5) भाषा सामाजिक अन्तःक्रियाओं का एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण माध्यम है।

(6) भाषा का प्रयोग व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार बार-बार करता है।

(7) भाषा का अध्ययन तथा विश्लेषण ~~सम्भव~~ सम्भव है।

(8) भाषा का प्रयोग मानव समुदाय में होता है। अतः भाषा समाज द्वारा नियंत्रित एवं स्वीकृत होती है।

(9) भाषा का संस्कृति के साथ गहरा ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्ध है।

(10) भाषा का उच्चारण वाक् अवयवों द्वारा होता है।

Social Importance of Language
(भाषा का सामाजिक महत्व) :- ~~महत्व~~

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक अन्तःक्रियाओं का आधार भाषा ही है। एक समाज की सभ्यता और संस्कृति का विकास भाषा के माध्यम से होता है। भाषा का सामाजिक दृष्टिकोण से अधिक महत्व है।

जैसी की स्थानान्तरित होती है।

Language and Society

भाषा एवं समाज :- समाजशास्त्रीय विचारधारा के अनुसार - भाषा सामाजिक संगठन, सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक व्यवहार के विकास का एकमात्र प्रभावी साधन है। भाषा का निकाय भाषा-व्यवहार के समस्त सामाजिक सन्दर्भ से है।

(1) भाषा द्वारा समाज एवं संस्कृति का स्वरूप गठित एवं विकसित होता है। भाषा विहीन समाज एवं संस्कृति की कल्पना नहीं कि जा सकती है।

(2) भाषा का प्रयोग समाज के सम्पर्क से ही सम्भव है। भाषा का जन्म समाज से होता है तथा इसका विकास समाज से होता है। तथा विचार विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है।

(3) सामाजिक व्यवहार के सुसंचालन के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके माध्यम से हम परस्पर सामाजिक व्यवहारों और रीति तरीकों को समझते हैं।

(4) समाज के अपने विचारों तथा भावों के आदान-प्रदान के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा का सामाजिक महत्त्व निम्न प्रकार है।

(1) भाषा के द्वारा बालक समाज के मूल्यों, नियमों और आदर्शों को सीखता है। इस प्रकार बालक के समाजीकरण में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(2) भाषा के द्वारा व्यक्तित्व के अध्ययन के साथ-साथ व्यक्तित्व के विकास में भी भाषा सहायक है।

(3) भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है, अत: इसकी सहायता से सामाजिक नियन्त्रण किया जाता है तथा इसके द्वारा समाज में एकता उत्पन्न किया जाता है।

(4) भाषा के द्वारा व्यक्ति अपनी अनुभूतियों, विचारों तथा इच्छाओं का आदान-प्रदान करता है।

(5) भाषा के द्वारा व्यक्ति के मानसिक अथवा संवेगात्मक तनावों को दूर किया जा सकता है।

(6) भाषा संस्कृति का एक अंग है इन दोनों में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। भाषा के द्वारा व्यक्ति की संस्कृति और उसकी सामाजिक स्थिति का ज्ञान किया जा सकता है। भाषा के द्वारा ही ~~संस्कृति~~ संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी

6-5 6-5

(ङ) सामाजिक व्यवहार :- व्यक्ति की भाषा

सामाजिक व्यवहारों के आकार-प्रकार में अहम भूमिका निभाती है। सामाजिक व्यवहार के आकार-प्रकार का कार्य है इस कार्य व्यक्तियों को बुद्धि देते हैं और इनसे बुद्धि प्राप्त करते हैं। यह सारी क्रिया व्यक्ति की भाषा पर निर्भर करती है। समाज के अनुकूल भाषा सामाजिक आकार-प्रकार में वृद्धि करती है। अगर समाज के प्रतिकूल भाषा समाज के व्यवहार के आकार-प्रकार के स्तर को नीचे गिरा दिया देती है।

(च) भाषा का सामाजिक मूल्यांकन :- भाषा

मूल्यांकन का अभिन्न अंग है। अतः भाषा के बिना मूल्यांकन नहीं हो ~~सकता~~ सकता। कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की बात सुनकर उसके भाव को समझकर और शब्दों के उच्चारण को समझकर इन सभी का विश्लेषण करता है और अन्त में मूल्यांकन करता है। किसी व्यक्ति की भाषा हम उसके बोलने के उच्चारण एवं शब्दों के प्रयोग से भाषा की पहचान करते हैं। भाषा की पहचान से यह पता चल जाता है कि बोलने वाले ~~के~~ के विचारों का स्तर कैसा है।

(छ) समग्र मूल्यांकन :- भाषा की परीक्षा

के कारण व्यक्ति न केवल दूसरों ~~के~~